गइया के ओरहन

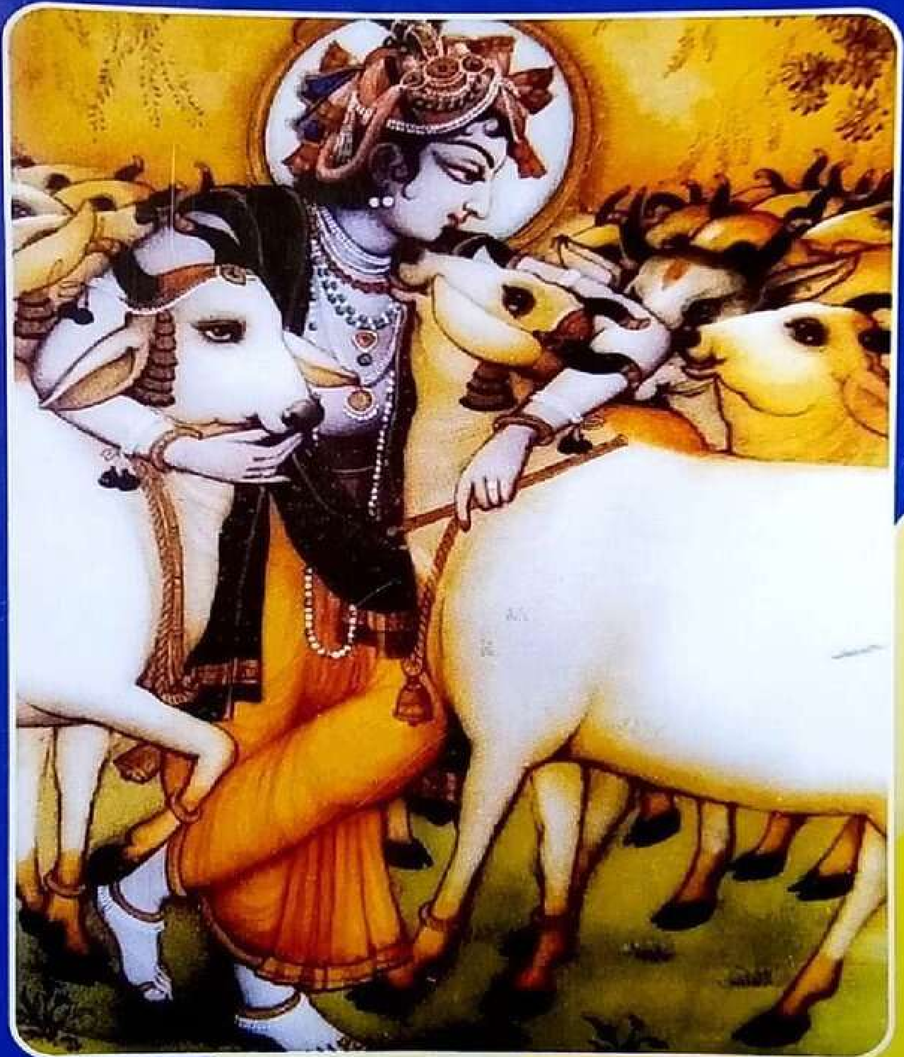

कन्हैया लाल पंडित

गइया के ओरहन

कवि

कन्हैया लाल पंडित

वातायन

गइया के ओरहन

रचयिता : कन्हैया लाल पंडित
भलुनीधाम
रोहतास (बिहार)
मोबाइल : 9631981929

विक्रम संवत : 2073
प्रथम संस्करण : फरवरी, 2017
सहयोग राशि : 25/- (पच्चीस रूपये मात्र)
ले आउट डिजाईन : अभिषेक कुमार
सर्वाधिकार : लेखक
मुद्रक : वातायन मीडिया एण्ड पब्लिकेशन प्रा.लि.
अयोध्या अपार्टमेन्ट, फ्रेजर रोड,
पटना - 800 001
दूरभाष : 0612-2222920, 9431040914

www.bhojpurisahityangan.com

!! श्री गणेशाय नमः !!

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ

गवा में अग्रतः सन्तु गवा में सन्तु पृष्ठथः।
गवा में सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।।

– **योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण**

''गायें ही मेरे आगे रहती हैं। गाये ही मेरे पीछे।
गायें मेरे चारों तरफ रहती हैं।
मैं गौओं के मध्य ही निवास करता हूँ।

www.bhojpurisahityangan.com

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	आशीर्वाद	5
2.	शुभकामनाएं (रामवचन शास्त्री 'अंजोर')	7
3.	जीवेम शरद : शतम्	10
4.	शुभकामना (डॉ. देवव्रत चौबे)	12
5.	कवि के आपन बात	13
6.	देवगुरु वन्दना	15

खंड-३

7.	श्री कृष्ण के समय के इयादि	17-25
8.	गइया के ओरहन	26-43
9.	गइया के सराप	44-46

www.bhojpurisahityangan.com

आशीर्वाद

भारतीय सनातन संस्कृति की परंपरा निरंतर प्रवहमान रही है। हमारी राष्ट्रीय चेतना सुदीर्घ सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपरा तथा प्राचीन साहित्यिक धाराओं में मानवीय मूल्य सघन रूप में विद्यमान हैं।

भोजपुरी कवि लेखक एवं संस्कृतिकर्मी कन्हैया लाल पंडित एक विशिष्ट प्रतिभा लेकर यहाँ उपस्थित हैं। इनके द्वारा रचित काव्य पुस्तिका **''गइया के ओरहन''** गो रक्षा हेतु गो माता के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का गुहार किया गया है जो कि शास्त्र सम्मत, लोक सम्मत एवं युग सम्मत है। कविता का तर्ज रघुवीर नारायण का प्रचलित गीत **''सुन्दर सुभूमि भइया''** वाला हर मुख गायन योग्य है। लेखक कन्हैया और द्वापर के कन्हैया दोनों टेक पर आकर एक हो जाते हैं। मैने इसं पांडुलिपि को आद्योपांत देखा है

www.bhojpurisahityangan.com

निश्चित रूप से गोमाता सनातन संस्कृति की धरोहर एवं हर व्यक्ति के लिए प्राणोपम प्रिय है। गाय का शरीर एक सम्पूर्ण तीर्थ होता है। गाय का गोबर भी विशुद्ध होता है। गाय का दूध, दही, घी, मक्खन तो अमृत तुल्य है। यहाँ तक कि गोमूत्र से कठिन रोगों का निदान संभव है ऐसा प्रमाणित है।

इस पुस्तक ने गो भक्ति का उन्मेष हर हृदय में किया है। गोमाता ने जो इस पुस्तक में अपनी उलाहना दी है उनके सामने हजारों वकीलों के तर्क व्यर्थ हो गये हैं। यह पुस्तक प्रत्येक मनुष्य को आत्म-निरीक्षण के लिए बाध्य कर देती है। यही कवि जीवन की कसौटी है जिस पर कन्हैया जी खरे उतरे हैं। अतः उनको पूरे समाज के साधुवाद का सच्चा अधिकारी मानता हूँ।

जीवेम शरदः शतम्!

लक्ष्मीप्रपन्न जीयर

पूज्य श्री त्रिदण्डि स्वामी जी महाराज के शिष्य

श्री लक्ष्मीप्रपन्न जीयर स्वामी जी महाराज

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

शुभकामना

भाई कन्हैया लाल जी पंडित एगो बड़ा होहकारी मर्द हवन। मनोबल के धनी पंडित जवना काम पर भीड़ि जइहें ओके बे ओरिअवले दम ना लीहन। रेती में फूल उगावल केहू इनसे सीखो। एकर प्रत्यक्ष उदाहरण भलुनीधाम बा। का से का हो गइल। ई केकर देन बा? सोचे के बाति बा। एकरा में हजारन मनई योगदान कइले बा। बाकी सबके एक जगहा बटोरल–जवरावल कठिन ऊदम रहल। ई कुल इनहीं का त्याग आ जँगरतोर उधामत के दमगर परतोख बनि के झकझकात बा माई का किरपा से सुरसतियों के नेह–छोह मिले लागल।

'गइया के ओरहन' लघुकाव्य नवोदित कवि के पहिल रचना बाटे। एकरा में कुल तीन गो छोटे–छोटे खण्ड बाड़न स। पहिल खंड में गइया, श्री कृष्ण भगवान के कार्यकाल (द्वापर) के ईयाद कई के झवान बाटे। आजु कतना हलकानी में परलि बा ओकर बरनन बड़ा द्रवित करे वाला बा। दूसरा खंड में ऊ श्री कृष्ण के गोहार करति बा

www.bhojpurisahityangan.com

उनके ओरहन दे रहल बा। आखिर में तीसरा खंड धमकि जाता। जवना में ऊ अजिज होके सरापो दे डालति बा। एह काव्य में कवि के पीड़ा उतिरा गइल बा। हम कवि के एह प्रयास पर साधुवाद देत अघात नइखीं। एह पुस्तक के कुछ मार्मिक छंदन के बानगी हेंठा दीहल जा रहल बा श्री कृष्ण द्वारा गो प्रेम के कवि कतना नीमन तरे उरेहले बा ऊ बड़ा देखनउक लागत बा –

''गोबरा के टीका करऽ।
मुतवा के माथा धरऽ
माई-माई कहि के पुकारऽ
हो कन्हइया।''

गोमाता के प्रति कृष्ण द्वारा अनघा सरधा के उदाहरण अनेक जगहा पर टाँकल बा।

कवि गऊ दुरदसा से उबिया के तड़पि जाता। ऊ बिकल हो के गाय बनि के चिकरे लागत बा –

''केकरा से भेजीं पाती,
सभे बाटे, दूध-घाती
कहाँ-कहाँ पीटीं हम छाती
हो कन्हइया।''

www.bhojpurisahityangan.com

सराप खंड में कवि के हिरदया बिहरि के छितिरा जाता ओही तरे ओकर आत्मा रूपी गायो डँकरे लागति बा –

"जदुकुल जरी-मरी रघुकुल प बिपति परी,
हिन्दू कुल धसीहें पताल हो कन्हइया।"
लहकति अगिया में वृन्दावन जरी-छरी,
सुख जाई जमुना के धार हो कन्हइया।

एह तरह से कवि के आत्मा, गाय बनिके कृष्ण के गोहार कइले बा। एह कलपना के आवाज भला आज के पटना भा दिल्ली के कृष्णन के बजर कान में सुनाई दी का? पंडित जी के अथक प्रयास खातिर हम अपना ओर ले धधा-धधा के धन्यवाद दे रहल बानी।

एह उमेदि का साथे कि इहाँ का समाज में धर्म में, साहित्य में अजगुत धमाका करत रहीं।

जय कृष्ण! जय गो माता!

रामबचन शास्त्री 'अंजोर'
करगहर-रोहतास

□□□

www.bhojpurisahityangan.com

जीवेम शरद : शतम्

श्री कन्हैया लाल पंडित जी लगभग तीन दशकों से भोजपुरी भाषा के विकास और उन्नयन में लगे हैं। ''यक्षिणी भवानी'' की सेवा, भवन निर्माण और साहित्यिकों का निर्माण इन्होंने उभय भांति क्रिया है। उस देहात में भोजपुरी-हिन्दी के बहुत बड़े सेवकों और आराधकों को अपने से ले जाकर उनकी सेवा की है। वहाँ के एक बहुत बड़े महात्मा श्री नागा बाबा जी (विमलानंद सरस्वती जी) का आशीर्वाद इन्हें प्राप्त है। इस प्रकार साहित्य सेवा के त्रिभुज (पाठक, लेखक और भावी कवियों) के निर्माण में इनकी भूमिका सराहनीय रही है।

साहित्य सेवा अपने भीतर से उद्बुद्ध होती है। जिसके भीतर श्रद्धा नहीं वह सत् हृदय (सहृदय) नहीं हो सकता। सत् में ही श्रद्धा का निवास है। वही सारे सचराचर को अपने भीतर ला सकता है।, जहाँ राग-द्वेष का निवास हो नहीं सकता। अत: साहित्य का सेवक सच्चा साहित्यिक बन जाता है। मैंने उनकी श्रद्धा को साहित्यकारों के प्रेम-पाश में बांधने का अनूठा साधन हृदय से स्वीकार किया है। अत: उसको नमन करने में कोई संकोच नहीं होता। वैष्णव की पूजा करने वाले से सारे विश्व की पूजा स्वत: हो जाती है - 'विश्वं च तेन पूजितम्'। कन्हैया जी हमारे रोहतास के अग्रणी साहित्य सेवी एवं उदार याचक के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनका सांगठनिक स्वरूप इससे भी उदात्त है। उनकी अनेक कविताओं और वक्तव्यों को 'माई के बोली' में मुझे प्रकाशित करने और मंच पर सुनने का सौभाग्य मिला है। अत: मैं उनकी प्रशंसा नहीं कर सकता,

www.bhojpurisahityangan.com

क्योंकि वे हमारे अंग हैं और उनसे मैंने भोजपुरी में अपने को व्यक्त करने की कला सीखी है।

'गइया के ओरहन' उनकी छोटी पद्य पुस्तिका है। इसमें –'विश्वमातरः' गो की उलाहना व्यक्त की गई है। गो–माता के हृदय की बात को कन्हैया जी ने अपने माध्यम भोजपुरी – भाषा में इस प्रकार कहा कि वह सबके हृदय की वाणी बनकर उनके माध्यम उतरी है। मुझे गो–माता पर एक और पुस्तिका कभी देखने को मिली थी। वे उरदा के राजनीति तिवारी की थी। उसका नाम –गो–माता' या कुछ था। सवैये में लिखा गया था। कन्हैया जी का नाम जिस प्रकार तुकाग्रह से नहीं सच्चे अर्थ में 'गैया' से स्वयं जुड़ा है, अपनी लेखनी से भोजपुरी–भाषा में इस स्मारक ग्रन्थ में इन्होंने अपनी बातों को पिरो दिया है। 'गो' के ऊपर मुझे वेदों में लगभग दो सौ ऋचाएं मिली हैं। 'कल्याण' ने गो–अंक' में उसे निकाला है, लेकिन रोहतास की भूमि से काब्यिक रूप में इस 'ओरहन' का अपना पृथक्, अनन्य और सर्वाधिक महत्व है। मैं कन्हैया जी के इस प्रयास का स्वागत करता हुआ उनको अपने अशेष आशीर्वाद का भाजन मानता हूँ।

जीवेम शरदः शतम्।

डॉ. नन्द किशोर तिवारी

पूर्व संपादक

'माई के बोली'

प्रो. एवं भू.पू. विभागाध्यक्ष

हिन्दी विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय,

आरा (बिहार)

❏❏❏

www.bhojpurisahityangan.com

शुभकामना

कविवर श्री कन्हैया लाल पंडित के खूबे नीमन से लीखल ''गईया के ओरहन'' कविता पढ़ के मन खुश हो गइल। ई एतना नीक लागल कि एक हाली में कुल्ह पढ़ गईनी। कन्हैया आ गइया के बीच केतना लगाव रहे एकरा के भोजपुरी में रच के एतना नीमन रूप से हमनीं लोगिन के आगे परोसले बानीं एकरा बारे में कौनो बड़ाई कइल सूरज के दीया दीखावला लेखा बा। गईया के मुंहवाँ से रउवा जवन बतिया कहववले बानीं उ आज भी देखे के मिलता। गइया ना रही त हमनियों के ना रह पाइब जा काहें कि ई हमनी के धर्म के चिन्हा ह। गइया कहताड़ी कि हमार कहल ना मनब जा त बड़ी भारी दिक्कत में पड़ जइब जा हमनी के देसवा माटी में मिल जाई।

एह कविता के लिखे वाला से हम इहे कहल चाहतानी की ओही राह पर चले खातिर देसवा के बड़का भारी नेता लोग भी कहले बाड़न ओह बड़ लोगन में पंडित मदन मोहन मालवीय आउर महात्मा गाँधी जी जइसन लोग रहे। हम इहे कहल चाहत बानीं कि हमरा अइसन लागताऽ कि राउर ई किताब आवे वाला लइकन खातिर राह देखाई। एही तरे रउरा नीमन कविता भोजपुरी में लीखत रहीं एह से हमनी के भोजपुरी भी बाँचल रही अउरी हमनी के धरम-करम पर कवनो आंच ना आई।

- डॉ. देवव्रत चौबे
दर्शन एवं धर्म विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

www.bhojpurisahityangan.com

कवि के आपन बात

''गइया के ओरहन'' ई हमार बहुत पहिले के लिखल पहिला काव्य ह। परम गुरू श्री श्री 1008 श्री विमलानन्द सरस्वती जी के शुभ आशीर्वाद आउर जगत जननी श्री यक्षिणी माई के कृपा से गो माता के सान्निध्य में भगवान श्री कृष्ण के समक्ष बइठ के एह काव्य के रचना भइल बा।

गाय के गोबर, मूत्र, दूध, दही आउर घी सभ अमृत ह। गाय के गोबर में जहरीला कीटाणु के मारे के क्षमता बा। एही से आजो घर–आँगन गाय के गोबर से लीपल जाला। गाय के गोबर, मूत्र, दूध, दही आउर घी से पंचगव्य बनेला जवना के प्रसाद रूप में हिन्दू जाति बड़ा श्रद्धा आ भक्ति से ग्रहण करेलन आ अपना माथा पर चढ़ावेलन आ अपना भाग्य के सराहेलन।

जवना तरह से भगवान श्री कृष्ण के कहल गीता कवनों एक जाति खातिर मंत्र ना ह तमाम मानव जाति खातिर योग, कर्म, ज्ञान आउर संसार में जिये के कला ह उपदेश ह, ठीक ओही तरी गाय मात्र हिन्दुए जाति के माई ना हई संसार के तमाम लोगिन के माई हई। संसार भर के लोगिन से हम पूछल चाहत बानीं कि, का संसार में अइसनों केहू होई जे गाय के दूध ना पियले होखी? जेकर हम दूध पिअलीं का ऊ माई ना लागी? गाय में तैंतीस कोटि देवता के बास बा अइसन शास्त्र के कहनाम बा। जे गाय के सेवा करेला उ तैंतीस कोटि देवता के पूजा करेला। ऊ मंदिर, मस्जिद आ गिरिजाघर में जाय भा ना जाय ओकर पूजा हो गइल। माई के दूध से पेट ना भरी त माई के मास खइला से पेट भरी?

www.bhojpurisahityangan.com

एगो उर्दू शायर अब्दुल गफ्फार जी के शायरी देखल जाय । जवना के पढ़ला से लागत बा कि गाय खातिर उहाँ के शरीर के रोम-रोम में गाय के प्रति कतना श्रद्धा आऊर आस्था रहल बा :-

'किसी जाति का नहीं, धर्म का नहीं, यह हर घर का है।
गो हत्या का प्रश्न समूची मानवता भर का है।
गो हत्या करने वाला सभ्यता उचाट रहा है।
गाय काटने वाला अपनी माँ को काट रहा है।
माँ के हत्यारे को खुलकर दंड दिलाना होगा।
गाय की रक्षा का घर-घर में अलख जगाना होगा।
बसुधा के वैभव का दर्शन नहीं चटकने देंगे।
शीश भले ही जाये, लेकिन गाय नहीं कटने देंगे।'

'स्वतंत्रता सेनानी हकीम अजमल खाँ मुसलमान भाई से आग्रह कइले बानी कि न तो कुरान शरीफ और न ही अरब की प्रथा गाय की कुर्बानी की इजाजत देती है।'

एह पुस्तक के प्रकाशन खातिर सबसे पहिले श्री त्रिदण्डी स्वामी जी के शिष्य श्री लक्ष्मी प्रपन्न जियर स्वामी जी महाराज, श्री युगल किशोर त्रिपाठी, डॉ. नन्द किशोर तिवारी, श्री राम मनोहर सिंह, सरोज पंकज, श्री सर्वदेव ओझा, दयाशंकर मिश्र, पुर्णमासी राम, बृजबिहारी सिंह, सुनील कुमार पत्रकार, श्री राजगृही ओझा आऊर भोजपुरी परिवार के साथे हमार सम्पूर्ण परिवार प्रोत्साहित कइल, एकरा खातिर सबके प्रति हम अभारी बानी।

आई, गो रक्षा खातिर घर-घर में अलख जगाईं
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई मिलके अभियान चलाईं।

श्री कन्हैया लाल पंडित

www.bhojpurisahityangan.com

देव गुरु वन्दना

गिरिजा सुत मंगल करन
करऽ राष्ट्र कल्यान
गइया के दुख आजु हम
चाहीं कइल बखान।।
शिवा-शिव कुल देवता
विनय सुनहुँ करतार
दास कन्हइया पर करीं
नाथ दया एक बार।।
कलम नोंक पर शारदा
अगर विरजतीं आइ
खुलित छंद के बन्ध तब
हम गइतीं हरखाय।।
गइया के गीत गाईं
बीन तू बजा द
गोपाल के सुनाईं
अस साज तूँ सजा द।।
मन गोपाल के चिढ़ाई
लप-लप कलम बना द
मरल मन में राग माई
संग भाव के सना द।।
हंस सवरिया धवल वस्त्र में
जननी रूप दिखा द
गइया गवहिया बनि जा मइया
ओरहन आज लिखा द।।

www.bhojpurisahityangan.com

जासु कृपा भव सिन्धू
पापी हूँ तरि जाय
चरन्न सोइ गुरू देव के
रहय दास मनाय।।
गुरू कृपा अवलम्ब एक
चरनन धूरि आधार
गइया ओरहन नाथ बनि
राउर मात्र दुलार
पुनः कन्हइया के चरण
सुमिरि कन्हइया लाल
गइया ओरहन सुनहुँ अब
त्राहि-त्राहि गोपाल।।

परम् गुरु श्री विमला नन्द सरस्वती जी महाराज
जटहा आश्रम, नटवार, रोहतास (बिहार)

गइया ओरहन नाथ अब अर्पित चरन तोहार।
बार-बार बिनवउँ प्रभू कलम बने तरवार।।

www.bhojpurisahityangan.com

श्री कृष्ण के समय के इयादि

गइया रोअत बाड़ी
अँखियन लोर ढारी
कब करबऽ हमरो
गोहार हो कन्हइया।।

गोकुला देलऽ बिसार
ग्वाल-बाल दोस्त यार
भूलि गइलऽ हमरो
पियार हो कन्हइया।।

हमरे करनवाँ तूँ
काँटे-कुस बनवाँ में
पाछा-पाछा रहऽ
छिछियात हो कन्हइया।।

अन्न से भरल डाँठ
खींचि-खींचि रहीं खात
तबहूँ ना रहनी
पिटात हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

खूर से रहे धँगात
लिपल अगनवाँ से
तबहूँ ना रहनीं
छनात हो कन्हइया।।

चरि जाई सुघर साग
चाहे लह-लह पात
कहवाँ तूँ रहऽ
अनसात हो कन्हइया।।

काढ़ि दीं मचनियाँ
बिगाड़ि दीं किसनियाँ
कि तबहूँ ना छुवलऽ
छकुनियाँ कन्हइया।।

कोरवा पितमरो के
बछरू चबाइ जात
तबो ना चलवलऽ
चभुकिया कन्हइया।।

लेइ-लेइ दूध-भात
मुँह में तूँ लाव हाथ
पेटवा में रहलऽ
समात हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

सहि बछिया के लात
रहऽ फूले ना समात
गरवा में रहऽ
लपटात हो कन्हइया।।

जसहीं होखे बिहान
गइये में लागे ध्यान
रहनीं दुलार पर
हरान हो कन्हइया।।

भोरे-भोरे उठि कान्ह
बने में करऽ पयान
लागत रहे घास
बेठेकान हो कन्हइया।।

नन्द के रहऽ कुमार
चाकरो रहन हजार
अपने हँसोतलऽ तूँ
सार हो कन्हइया।।

गोबरा के टीका करऽ
मुतवा के माथा धरऽ
माई-माई कहि के
पुकारऽ हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

नाद प खिआवऽ सानी
अपने पियावऽ पानी
टुकुर-टुकुर रहलऽ
निहारत कन्हइया।।

नाहीं जब चरीं घास
सटि जात रहऽ पास
गइयें में रहऽ
दिन-रात हो कन्हइया।।

खात नाहीं रहीं सानी
तुहूँ ना पियत पानी,
धाई के पुकारऽ
नन्द रानी हो कन्हइया।।

कहसु ऊ धनि सुत
कोंखी के जनमल पूत
गो सेवा मे कवन
तोर सानी हो कन्हइया।।

पगुरी होखत बन्द
मुरली भुलाले छन्द
बैदा बोलावऽ
छने-छन हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

देखते उदास मन
छोड़ि द गइल बन
घरहीं निहारऽ तूँ
चरनि हो कन्हइया।।

हरियर दुबिया के
लहसल पुलुँगिया से
मुँहवा में रहलऽ
धरावत कन्हइया।।

रोई–रोई कही मात
कवन चूक भइल रात
अँखियन झरति
बरसात हो कन्हइया।।

गुनियन के राखऽ साखी
गरदन में करिया बाती
गइया के लागे नाहीं
आँखी हो कन्हइया।।

राखऽ ना सेवा में बाकी
जसऽ तूँ कोंखी के थाती
रहलऽ जीवन के
संघाती हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

जवने बतावे कोई
धाई-धाई करऽ सोई
एगुड़ो जतन ना
उठावऽ हो कन्हइया।।

पूजा करऽ शिवजी के
गोड़ पर गनेशजी के
कुल देवी-देवता
मनावऽ हो कन्हइया।।

बन के का कहीं हाल
मन बा बड़ा बेहाल
उठे रहि-रहि छतिया में
साल हो कन्हइया।।

बाँसुरी के सुनर गान
अबहुँ गुँजेला कान
तोहरा बिनु लागे
सुन-सान हो कन्हइया।।

बृन्दा बनवाँ के लीला
मन में करेला पीरा
कहवाँ सुनात बा
ऊ तान हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

गइये में रहे नेह
ग्वालिन बिकल देह
घेरी-घेरी रसिया
रचावे हो कन्हइया।।

मन के मंदिरवा में
तोहरा हियरवा में
माई बनि
पइठल रहनीं कन्हइया।।

कोमल कलइया में
सुघर सुघरइया में
कबहीं ना भुललऽ
तूँ गइया कन्हइया।।

कूक कोयलियन के
मृगनयनी अँखियन के
कहवाँ उ रोकली
रहतिया कन्हइया।।

रास नाहीं रोके बाट
रहे ऊ गजब ठाट
रगे-रगे हमरे से
नात हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

गाय के करे ना बात
नाहीं डाले खर पात
कहाँ रहे तोहरा
सोहात हो कन्हइया।।

छोड़ी पचरंगी रंग
धरऽ तूँ गाई के संग
सखिया हरान
तंग-तंग हो कन्हइया।।

जे धरे ना गाई के संग
ओ प लागे रोज दंड
ओरहन सुनी माई
दंग हो कन्हइया।।

छोड़ के तूँ मोह जाल
करत रहल प्रतिपाल
गइये खातिर बनलऽ
गोपाल हो कन्हइया।।

मोरवा मुकुट भाल
बिसरे ना कबो लाल
आवऽ अँखिया बताई
सब हाल हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

दउरी के आवऽ लाला
लोरवा के परल छाला
लोगवा चलावस
अब भाला हो कन्हइया।।

हड़वा के लागल टाला
जिअते छिलाता छाला
रोअ तानी पटरी के
पाला हो कन्हइया।।

भारत मे बा बिहान
धरती से आसमान
गइया खातिर नइखे
बिधान हो कन्हइया।।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

कंस के मारे के डरे
यशोदा माई के घरे
टोकरी में धई के
फेंकइलऽ हो कन्हइया।।

छछनत रहे परान
होखी कइसे बिहान
दूधवे के धार से
पलइलऽ हो कन्हइया।।

यशोदा जी के का परे
लइकी यक्षिणी*. त रही घरे
तीनों देव धरे नित ध्यान
हो कन्हइया।।

बड़े-बड़े रजवाड़े
नन्द जी के पाँव परे
दूधवा के बहे नदी
नारे हो कन्हइया।।

यक्षिणी योग युक्ता च यक्षराज प्रसूतिनि। यात्रा यान विद्यानाज्ञा यदुवंश समुद्भवा।।

www.bhojpurisahityangan.com

मितवा के हितवा से
लोकवा के लजवा से
नन्द बाबा रखलन
रितवा कन्हइया।।

जनमल तनवां से
तोहरे करनवां से
तजि देलन बेटी
अष्ट भुजी हो कन्हइया।।

ना पियल माई के दूध
हम्हीं कइलीं उद-बुध
पलना से लेलीं
तोके पाल हो कन्हइया।।

हमहीं लिहलीं सुध
जनमल गीता के बुध
ठोंकलऽ लड़इया में
ताल हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

पोंछिया से हाँकी माछी
जीभी तहार देह चाटीं
राखत रहलीं साफा
चिकन माटी हो कन्हइया।।

तबे त धरत गोड़
माई के नाता जोड़
बछरून से करऽ
हड़ा-होड़ हो कन्हइया।।

विपति में दिहलऽ छोड़
जाने गइलऽ कवना ओर
कइसे भइले दिन
भोर हो कन्हइया।।

रहऽ तूँ करत सेवा
देत रहीं हम मेवा
दूध से भरत रहीं
पेटवा कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

दूधवे के पनिया
बनवलस जवनियाँ से
हमहीं पोछलीं तोर
देहियाँ कन्हइया।।

दिहलीं माई के प्यार
कइलऽ सेवा हजार
तबे तूँ बनलऽ
पत्तवार हो कन्हइया।।

हमरे दूध के धार
कहलस अवतार
जानि गइल सभ
सनसार हो कन्हइया।।

हमरे दूध के बल
मरलऽ राक्षस दल
जन-जन हलचल
मचवलऽ हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

हमरे गोरस धार
जनमल गीता के सार
अरजुन लिहलऽ
उबार हो कन्हइया।।

दूधवे के नेहियाँ
बनवलस जवनियाँ से
बिसरे ना तोहरो
मुरतिया कन्हइया।।

दूधवे के नेहिया
करिअऊ साँवर कइलस
सोलह सौ मिलली ह
रनियाँ कन्हइया।।

कोइलर से रहऽ करिया
कहाँ मोहत रही गोरिया
दूधवे कहवलस
करतार हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

यशोदा धरसऽ कान
गइये तुरसऽ छान
बलराम होखस
उत्तान हो कन्हइया।।

रहऽ ओखर ओरचाइल
रहे दाँत निपोराइल
कइसे तरकुलवा
गिरवलऽ हो कन्हइया।।

इयाद कर काली दह
पानी करे ह-ह-ह-ह
कइसे चउकड़ी
लगवलऽ हो कन्हइया।।

तुहीं नाग नाथऽ उहाँ?
अबे रहऽ दूध मुहाँ
कइसे पेन्हवल
नथुनियाँ कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

कंस के दुतवन के
बड़े-बड़े भूपन के
भुइयाँ में धुरिया
मिलवलऽ हो कन्हइया।।

देखि दूधवे के तेज
भइल कंस अचेत
होई गईल ओकर
हाट-फेल हो कन्हइया।।

बरसा मुसलधार
मचि गइल हाहाकार
अंगुरी उठवलऽ
पहार हो कन्हइया।।

कहाँ गइलऽ गिरीधारी
सुनऽ सुनऽबनवारी
दूधवे के धार
बरियार हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

टूटल इनर के सान
रखलऽ गोपिन के मान
लाज से गड़ल
असमान हो कन्हइया।।

कहावाँ कइनीं हलकान
सभे से कहनीं भगवान
अब नइखीं होत
मन-मान हो कन्हइया।।

धृतराष्ट्र दरबार
गइये रही पतवार
संगवा में कवन
रखवार हो कन्हइया।।

बान्हे के रहे विचार
भइल करन अलचार
गइये उहाँ कइली
हाहाकार हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

द्रोन आ किरिपा चारज
भीषम बली धनुविसारद
चकित हरान
अंग–राज हो कन्हइया।।

राखत रहीं हम्हीं लाज
देखि के तोहर अकाज
दूधवे धइलस
माथे ताज हो कन्हइया।।

पतई पीपर के माथ
ध के कह साँच–साँच
कहवाँ छोड़लीं हम
साथ हो कन्हइया।।

हँसी–हँसी रहीं जात
खूब तूँ बनाव बात
अब झूठहूँ बुझाता तोर
नात हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

रहऽ कइले बड़ी पूत
बनि के तूँ देव दूत
अब मनवाँ में रखलऽ
का गूत हो कन्हइया।।

जाई के सरगवा में
गइया के भूली गइलऽ
बहे लागल खूनवाँ के
धार हो कन्हइया।।

आई के देखऽ हाल
गइया के लाल-लाल
खुनवाँ से लथ-पथ
छाल हो कन्हइया।।

करत बानी आह-आह
नइखे कहीं चारागाह
केकरा बा हमरा के
दाह हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

सुखले पुअरा चबात
बछरू बुढ़ा बुझात
अँखियन से नइखे
सुझात हो कन्हइया।।

देखि-देखि हाल मोर
फाटे ना करेज तोर
कइसे भइल भोर
गइया कन्हइया।।

जवना धरतिया प
गइया के पुजा कइलऽ
बयतरनी के बतवलऽ
पतवार हो कन्हइया।।

तवने धरतिया प
गइया कटात बाडी
खुनवाँ करेला
फुँफुँकार हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

जिअते में खर–पात
बन भइल जल जात
दिन–रात सहीं
सीत–सात हो कन्हइया।।

चिल्हिया मेड़र मारे
जिअते में आँख काढ़े
चारू ओर घुमे
गीध–काग हो कन्हइया।।

कुकुरा करेला सोर
घूम–घूम चारू ओर
सियरा पिटेला खुब
ढ़ोल हो कन्हइया।।

भूलि गईल गऊदान
होता रोज बलिदान
चाम खातिर लागता
निशान हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

खुंटवा कसइया के
पूत बेंचे गइया के
बाँटि-बाँटि खाले
मोर मास हो कन्हइया।।

भुलाइल बान्हल घाँटी
देहीं के झारल माटी
देखऽ देहियाँ थुराता
लाठी-लाठी हो कन्हइया।।

ना गुरिया बन्हाता लाला
गोड़ में भराता ताला
ताली पीटी गरदन
कटाता हो कन्हइया।।

होखे नाहिं विसवास
आवऽ लवले बानी आस
चारो ओरे लउकी
लासे-लास हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

रखिह गइया के सत
अइह अकेल मत
संग में सुदरसन
मत भुलीहऽ कन्हइया।।

ना अरजुन के साथे अइह
ना ऊधोजी के माथे अइह
बाटे जतिया के भुतवा
सवार हो कन्हइया।।

दल-दल में फँसल भारत
दूधवा भइल अकारथ
भइले भ्रष्ट बुधी
तेज-बल हो कन्हइया।।

नइखे परहेज अब
ईसाई-मियाँ-हिन्दू सब
गइया के खोभे...
खभ-खभ हो कन्हइया।।

www.bhojpurisa[illegible]tyangan.co

सबके पिआई दूध
बेटवन के पालीं खूब
होई के सेयान
काटे मुंड हो कन्हइया।।

ईसा के उपदेश भुलल
मुसलम ईमान गईल
भूली गईले हिन्दू
गीता ज्ञान हो कन्हइया।।

अकबर समराट
नर हरि कविराज*
रहे गइया ना कटाई
फरमान हो कन्हइया।।

---

*(क) प्रसिद्ध है कि नरहरि कवि के निम्नलिखित पद को सुनकर मुगल सम्राट अक़बर ने गौकसी बिल्कुल ही बन्द करा दी थी :-
तृण जो दन्तपर धरहिं तिनहिं मारत न सबल कोई,
हम नित प्रति तृण चरहिं बैन उच्चरहिं दीन होइ।
हिन्दुहिं मधुर न देहिं कटुक तुरकहिं न पियावहिं,
पय विशुद्ध अति स्त्रवहिं बच्छ महिथम्भन जावहिं।
सुन शाह अकबर! अरज यह, कहत गऊ जोरे करन,
सो कौन चूक मोहिं मारियत, मुए चाम सेवहुँ चरन।।

www.bhojpurisahityangan.com

आवऽ खोजऽ दस्तावेज
करऽ सभके लभरेज
फेनु गईया करीहें
दूधे उद-वुध हो कन्हइया।।

भोगऽ ताड़न फल सब
तबो ना बुझाता अब
मतिया भईल, खपतान
हो कन्हइया।।

मति जनिहऽ पाँती नाती
बाछा-बाछी चढ़स फाँसी
खून से लिखल खत
जनीहऽ हो कन्हइया।।

कइसे छपिटात बानीं
तड़पे ला छाती मानी
कहवाँ पढ़लीं, लिखिं
पोथा हो कन्हइया।।

जनमे से सेवा करीं
जने खातिर जरीं–मरीं
फँसिया के तकथा चढ़ी
हम्हीं हो कन्हइया।।

अदिमी के होई भला?
गइया के मांस खाला
दूधवा बनिहें अब
बिखिया कन्हइया।।

सुनऽ ना आवाज मोर
अदिमी के सुनऽ सोर
रोजे भोरे पढ़ऽ
अखबार हो कन्हइया।।

गइया त मिटी जाई
तूहूँ ना रहबऽ भाई
गइया ना त कहवाँ
गोपाल हो कन्हइया।।

❑❑❑

गइया के सराप

छछनत बा परान
रोजे होता बलिदान
मिटल जाता गईया के
निशान हो कन्हइया।।

सुनऽ सुनऽ यदुनाथ
छोडलऽ तूँ काहे साथ
भूलि गइल- गइया के
गोहार हो कन्हइया।।

मोरा सुनि के बिलाप
नाहीं अइब यदुनाथ
त गइया सराप धरऽ
माथ हो कन्हइया।।

यदुकुल जरी-मरी
रघुकुल पर विपत परी
हिन्दू कुल धसीहें
पताल हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

लहकत अगिया में
वृन्दावन जरी-छरी
सुखी जाई गंग-यमुना के
धार हो कन्हइया।।

कैंसर टी.बी. से ग्रस्त
एड्स-पोलियों से पस्त
सभे होइ जइहन
ध्वस्त हो कन्हइया।।

चारू ओरे मची सोर
परिहें अकाल घोर
लासे लास लउकी
सभ खोर हो कन्हइया।।

बुद्धि बिलाई जाई
नेस्ट-नेस्ट लाइट आई
भाई-भाई कटि मरी
जइहें हो कन्हइया।।

www.bhojpurisahityangan.com

भाई से भाई लरी
बपवा से बेटा जरी
लागी प्रिय माई से
मेहरिया कन्हइया।।

खतम होई राजनीति
हाबी होई जातिनीति
नाहीं रहि जाई
कूटनीति हो कन्हइया।।

उगली सूरज आग
गगन बरफ फाग
भागऽ-भागऽ-हाय-हाय
मची हो कन्हइया।।

मिली ना सरन कहीं
धरम बेचारा रही
अँखियन देखि गइया
सही हो कन्हइया।।

कन्हइया के ओरहन
ना जानिहऽ कन्हइया तू
लिखल गइया के खुने खत
जनिहऽ कन्हइया।।

□□□

www.bhojpuri-sansthan.com

लेखक द्वारा लिखित प्रकाशित/अप्रकाशित रचनायें

प्रकाशित

(1) श्री यक्षिणी चालीसा
(2) चमकेला चान मइया तोहरे से
(3) श्री यक्षिणी महात्म्य कथा
(4) कैकेयी प्रतिज्ञा (भोजपुरी काव्य)
(5) गइया के ओरहन (भोजपुरी काव्य)

अप्रकाशित

(1) राधा-कृष्ण बिरह (भोजपुरी काव्य)
(2) श्री यक्षिणी शतक
(3) कहानी संग्रह
(4) भलुनीधाम
(5) अन्य रचनायें।

कन्हैया लाल पंडित
आत्मज माता श्रीमती जामवंती देवी
पिता श्री गंगा दयाल पंडित

www.bhojpurisahityangan.com

महापुरुषों के गाय के संबंध में अमुल्य कथन

1. कोई भी धर्म (सम्प्रदाय) अपने (अस्तित्व के) सम्पोषण और समृद्धि के लिए गौ की हत्या करने का आदेश नहीं देता।
   – ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

2. गाय हमारी अर्थव्यवस्था की बुनियाद है।
   – ज्ञानी जैल सिंह

3. क्रूरतापूर्वक प्रारंभ हो चुके गौ-हत्या एवं अन्य जानवरों की हत्या के कारण भविष्य में हमारी आनेवाली पीढ़ी के लिए मैं चिंतित हूँ।
   – लाला लाजपत राय

4. भारतीय संविधान का प्रथम अनुच्छेद गौ-हत्या पर प्रतिबंध लगाने के लिए होना चाहिए।
   – पंडित मदनमोहन मालवीय

5. गोरक्षा भारतवर्ष का शाश्वत धर्म है।
   – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

6. एक गाय अपने जीवन काल में 4, 10, 440 लोगों का पेट भरती है जबकि इसका माँस सिर्फ 80 लोगों के लिए ही पर्याप्त है।
   – स्वामी दयानन्द सरस्वती

7. गाय की रक्षा समस्त भारतीय दर्शन का चरित्र है।
   – आचार्य विनोवाभावे

8. 'गाय' दया और करुणा की कविता है। यह विश्व के करोड़ों लोगों की माता है। गाय की रक्षा करना समस्त मौन प्राणियों की रक्षा है।
   – महात्मा गांधी

9. गाय माता कई मायनों में जन्म देने वाली माता से बेहतर है हमारी माँ हमें इस उम्मीद के साथ दूध पिलाती है कि मेरा बेटा बड़ा होकर मेरी सेवा करेगा, लेकिन गाय माता घास और थोड़े से अनाज के अलावे हमसे कुछ भी आशा नहीं रखती।
   – महात्मा गांधी

www.bhojpurisahityangan.com

परिचय

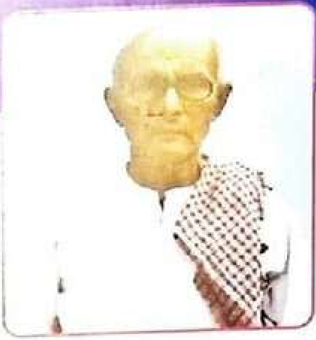

कन्हैया लाल पंडित का जन्म बिहार राज्य के रोहतास जिला के भलुनीधाम नामक ग्राम में 15 अक्टूबर, 1943 ई. को हुआ। 'गइया के ओरहन' इनका चौथा काव्य संग्रह है। हालांकि ये युवा अवस्था से ही अपनी मातृभाषा भोजपुरी और हिन्दी में कवितायें, कहानियाँ व भजन लिखते रहे हैं। पंडित जी की कवितायें अधिकतर भक्ति प्रधान हैं। भाव सौन्दर्य से गुंथी कवितायें एक भक्त और दास की अपनी आराध्या से भावों की निश्छल अभिव्यक्ति है। पारिवारिक व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन की जो भी उनकी चिन्तायें, दुःख व कष्ट है उसका खुलासा वे कुलदेवी माँ यक्षिणी से करते हैं। शक्ति के महान साधक व दुर्गा सप्तशती के मर्मज्ञ अपने पिता **स्व. गंगा दयाल पंडितजी** की तरह वे साधना से भी नहीं जुड़े हैं, पूजा-पाठ जैसा भी कोई नियम उनके दैनिक जीवन में नहीं है। सरकारी नौकरी की भागदौड़, परिवार व समाज की चिन्ता से जुड़े रहने के कारण अनियमितता का भी इसका एक कारण है।

इनकी भक्ति रामकृष्ण परमहंस वाली भक्ति है। हर चिन्ता, दुःख व कष्ट माँ से मांग लो...। सचमुच जीवन की तमाम अपेक्षायें जब परिस्थितियों के बवंडर में फँसकर अधूरी रह जाती हैं तो चित की शांति के लिए आध्यात्मिक चिंतन व ईश्वरीय आराधना से बड़ा उपाय कुछ भी नहीं है।

पिछले तीन दशकों से पंडितजी 'श्री यक्षिणी' भोजपुरी साहित्य समिति, भलुनीधाम के माध्यम से अपने मित्रों, सहयोगियों व क्षेत्र के हरेक लोगों से जुड़कर 'यक्षिणी माई' व 'भोजपुरी माई' की सेवा में लगे है।

वातायन
0612-2222920